अध्याय 1

संधान सूत्र

अध्याय – 1

संधान सूत्र

(1) विषय का महत्व :-

प्रस्तुत विषय ' बस्तर क्षेत्र के स्थापत्य का अध्ययन ' (5 वीं शती ई. से 12 वीं शती ई. तक) के अन्तर्गत बस्तर क्षेत्र पर राज्य करने वाले नल वंश के काल में मंदिर स्थापत्य का प्रांरभिक स्वरुप दिखाई पड़ता है किन्तु कालान्तर में दीर्घ काल तक नागवंशी शासकों का प्रभाव होने के कारण इस क्षेत्र में निर्मित मंदिर स्थापत्य कला में विकसित तथा सीमावर्ती कला शैलियों का प्रभाव दिखाई पड़ता है। नागवंशी शासकों का दक्षिण भारत में कर्नाटक, पूर्व में उड़ीसा, पश्चिम में आन्ध्रप्रदेश तथा विदर्भ , उत्तर में दक्षिण कोसल प्रदेशों से सम्पर्क होने के कारण यहाँ की स्थापत्य कला में उत्तर भारतीय नागर शैली ,पूर्व की उड़ीसा शैली तथा दक्षिण भारतीय द्रविड़ शैली के मिश्रित प्रभाव का अध्ययन विशेष महत्वपूर्ण है ।

बस्तर क्षेत्र में अब तक किये गये आरंभिक सर्वेक्षण कार्यों एवं क्षेत्रीय कार्यों के द्वारा ज्ञात पुरातत्वीय स्थलों का विस्तृत अध्ययन, मंदिरों का भूविन्यास तथा उत्सेध विन्यास सहित सर्वांगीण स्थापत्य संरचना का अध्ययन आवश्यक है। 1 नवम्बर 2000 को नवनिर्मित छत्तीसगढ़ राज्य गठन के पूर्व से ही बस्तर क्षेत्र में बस्तर, दन्तेवाड़ा एवं कांकेर कुल तीन जिले समाहित हैं । इसके अलावा प्राचीन काल में कांकेर के सोमवंशी शासकों के धमतरी जिले के सिहावा क्षेत्र में निर्मित कर्णेश्वर मंदिर समूह एवं दुधावा बांध के अंदर स्थित देवखूट नामक शिवमंदिर का अध्ययन भी इस शोध प्रबंध में विस्तृत रुप में पहली बार किया जा रहा है।

छत्तीसगढ़ राज्य में बस्तर क्षेत्र अपनी कला के कारण देश में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस क्षेत्र में उपलब्ध आंचलिक कला जहाँ विविध रुपों को प्रस्तुत करती है वहीं भारतीय कला में बस्तर क्षेत्र की स्थापत्य कला का महत्वपूर्ण योग दान है जिसका विस्तृत विवेचनात्मक अध्ययन अभी तक नहीं हुआ है। बस्तर क्षेत्र की स्थापत्य कला में क्षेत्रीय राजवंशों यथा नल ,नाग ,कलचुरि,वाकाटक, चालुक्य , काकतीय ,सोमवंशी आदि शासकों का विशेष योगदान रहा है। इनके संरक्षण में विकसित स्थापत्य कला में शैव ,वैष्णव तथा बौद्ध एवं जैन धर्मों से संबंधित क्षेत्रीय कला प्रभाव अलग –2 दृष्टिगोचर होता है। स्थापत्य कला की अध्ययन की दृष्टि से बस्तर के निर्मित मंदिरों में दक्षिण भारतीय शैली तथा उत्तर भारतीय शैली दोनो का प्रभाव है । इसी प्रकार मध्य बस्तर तथा उत्तर बस्तर में

उड़ीसा शैली , सोमवंशी ,कलचुरि तथा परवर्ती नागशासकों की कला का प्रभाव परिलक्षित है जिसका अध्ययन अभी तक विस्तृत रुप में नहीं हुआ है।

स्थापत्य कला के अध्ययन की दृष्टि से बस्तर क्षेत्र की कला का विशेष महत्व है। इनके सूक्ष्म अवलोकन एवं अध्ययन से बस्तर क्षेत्र में मिश्रित कला का प्रभाव दिखाई पड़ता है। बस्तर क्षेत्र के शिल्पी केवल शास्त्र पारंगत ही नहीं वरन देश के विभिन्न भागों की कलात्मक गतिविधियों से भी वे विधिवत परिचित थे। स्थापत्य कला में कलाकारों ने जहाँ शिल्प ग्रंथों से निर्देश प्राप्त किये वहीं उन्होंने अपनी मौलिक कल्पना शक्ति का उपयोग कर स्थापत्य कला में मौलिकता लाने का प्रयास किया है। यही कारण है कि बस्तर क्षेत्र की स्थापत्य कला का प्रतिनिधित्व करने वाले अवशिष्ट मंदिरों में शास्त्रीय लक्षण और मौलिक सूझ – बूझ का सामंजस्य मिलता है।

बस्तर क्षेत्र में छिन्दक नागों के काल में बारसूर नामक ग्राम में बत्तीसा मंदिर , चन्द्रादित्येश्वर मंदिर, मामा–भांजा मंदिर तथा गणेश मंदिर प्रमुख है। इनका विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है। इसी प्रकार भैरमगढ़ के शिव मंदिर , समलूर ग्राम में स्थित शिवमंदिर ,बस्तर का शिव मंदिर, नारायणपाल ग्राम में स्थित नारायण मंदिर ,छिंदगाँव में स्थित शिवमंदिर , चित्रकूट के पास स्थित शिवमंदिर, सिंघईगुड़ी आदि मंदिरों का विस्तृत एवं विवेचनात्मक अध्ययन पहली बार प्रस्तुत शोध कार्य के अंतर्गत किया जा रहा है। एक ओर जहाँ नारायणपाल के विष्णु मंदिर में उच्चशिखर एवं विशाल मण्डप युक्त उत्तरभारतीय नागर शैली का प्रभाव दिखता है वहीं बस्तर के शिव मंदिर में दक्षिण भारतीय चालुक्य कला शैली का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है।

बस्तर क्षेत्र में स्थापित प्राचीन काल से मध्यकाल तक के मंदिरों की स्थापत्य कला का आलोचनात्मक शोधपरक अध्ययन अभी तक अछूता ही रहा है। इस क्षेत्र में बिखरी हुई प्राचीन प्रतिमाएँ एवं कलाकृतियों का ही अध्ययन अभी तक पुरातत्व विशेषज्ञों द्वारा किया गया है। इसीलिये बस्तर क्षेत्र की स्थापत्य कला के शोधपरक अध्ययन (काल 5वीं शती ई. से 12 वीं शती ई. तक) एवं उनका आलोचनात्मक अध्ययन का मेरे द्वारा यह प्रथम विनम्र प्रयास है।

इस शोध प्रबंध का उद्देश्य बस्तर क्षेत्र की स्थापत्य कला को देश के अन्य कला केन्द्रों की कला शैलियों एवं स्थापत्य कला केन्द्रों से तुलनात्मक अध्ययन कर यहां की कला विशिष्टता को निर्दिष्ट कर, कला विविधता एवं स्थापत्य कला परिष्कार से अवगत कराना है।

(2) पूर्व में किये गये कार्यों का सर्वेक्षण एवं मूल्यांकन :–

प्राचीन वस्तर में समकालीन अन्य राजवंशों के साथ सांस्कृतिक समन्वय तथा प्रगाढता थी।

प्राचीन काल में बस्तर क्षेत्र को दण्डकारण्य के नाम से जाना जाता था । इस क्षेत्र में दुर्गम वनों तथा घाटियों की मौजूदगी, व्यापारिक मार्गों का सीमित पथ तथा भू –आकृति बाधक होने से आवागमन में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था। इसके बावजूद भी वर्तमान छत्तीसगढ़ , उड़ीसा , आन्ध्रप्रदेश और महाराष्ट्र प्रदेश से बस्तर का सम्पर्क सैनिक अभियानों तथा व्यापारिक यात्राओं के परिणामस्वरुप निरंतर बना रहा। पांचवीं से सातवीं शताब्दी के बीच बस्तर के नल शासकों के अधीन उड़ीसा के कोरापुट तथा दुर्ग जिले का दक्षिणी भू– भाग था। तत्पश्चात् बस्तर के छिंदक नाग शासकों का सांस्कृतिक संबंध तत्कालीन रतनपुर और लांजी (जिला –बालाघाट म. प्र.) तक विस्तृत था।

इस सम्पूर्ण अंचल के प्रारंभिक इतिहास के स्त्रोत अत्यल्प हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कैप्टेन मेकवियर [1], कैप्टेन इलियट [2], कर्नल ग्लसफर्ड [3] द्वारा प्रदत्त विवरणों में बस्तर के इतिहास और संस्कृति की झलक मिलती हैं। इस क्रम में बस्तर रियायत के तत्कालीन सुपरिंटेडेंट पण्डा बैजनाथ का योगदान भी महत्वपूर्ण है। बस्तर जिले के विभिन्न क्षेत्रों में उनके द्वारा ढूढ़े गये प्राचीन अभिलेखों के सम्पादन द्वारा रायबहादुर ,हीरालाल [4] ने बस्तर के इतिहास को उजागर करने का कार्य आरंभ किया। पण्डा बैजनाथ ने वर्ष 1906–7 में केसकाल के समीप गढ़ धनोरा में उत्खनन द्वारा शिवलिंग सहित मध्य कालीन मंदिर के अवशेष उजागर करने का कार्य प्रारंभ किया [5]। कांकेर के सोमवंशी शासकों की प्रांरभिक राजधानी धमतरी जिले में स्थित सिहावा रही है [6]।

वर्ष 1908 में पं. केदारनाथ ठाकुर द्वारा रचित 'बस्तर भूषण 'नामक पुस्तक में बस्तर के इतिहास का सांगोपांग उल्लेख किया गया हैं जो वाराणसी से प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में बस्तर राज्य के राजनीतिक , सांस्कृतिक इतिहास तथा कलावशेषों का विवरण दर्शाया गया हैं। उन्होने कोण्डागाँव तहसील के अन्दर धनोरा ,जगदलपुर तहसील में नारायणपाल, दन्तेवाड़ा तहसील में बारसूर, बड़े तुमनार, जांगला, भैरमगढ़, दन्तेवाड़ा आदि स्थानों पर प्राचीन मंदिरों के होने की जानकारी दी है। पं. केदारनाथ ठाकुर के अनुसार बारसूरगढ़ के आसपास 6–6 मील तक मंदिर और तालाव खुदे होने की जानकारी दी गई है तथा बारसूर में 147 बड़े मंदिर और 147 तालाब होने का उल्लेख है [7]।

प्राचीन कोण्डागाँव एवं वर्तमान में केशकाल तहसील के अन्तर्गत ग्राम अड़ेंगा से वर्ष 1939 में नल शासकों की स्वर्ण मुद्राओं का प्रकाशन प्रोफेसर मिराशी ने किया जिससे नलयुगीन वस्तर का इतिहास प्रकाश में आया [8]। उडीसा के कोरापुट जिला के कोडिंगा ग्राम के निकट वर्ष 1957 में

नाग शासकों की स्वर्ण मुद्राओं की प्राप्ति महत्वपूर्ण है [9]। बिलासपुर जिले के सोनसारी ग्राम में बस्तर के नागवंशी शासक सोमेश्वर देव की चार स्वर्ण मुद्रायें वर्ष 1921 में प्राप्त हुई थी [10]। उसके पहले बस्तर ग्राम से आदि वराह रजत द्रम्म मुद्रायें प्राप्त हुई थी जो वर्तमान में नागपुर संग्रहालय में सुरक्षित है [11]।

वर्ष 1938 में बस्तर रियायत के प्रशासक डब्ल्यू .वी. गिग्सन द्वारा लिखित पुस्तक 'माड़िया गोंड्स आफ बस्तर 'में बस्तर की संस्कृति और इतिहास का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है। बेरियर एल्विन के ग्रन्थों में भी बस्तर क्षेत्र के इतिहास और संस्कृति की संक्षिप्त जानकारी मिलती है [12]। वर्ष 1952 में लखनऊ में इण्डियन साइन्स कांग्रेस में बी. डी. कृष्णास्वामी ने सर्वप्रथम प्रीहिस्टोरिक बस्तर नामक शोध-निबंध प्रस्तुत किया। उन्होंने माड़िया जाति द्वारा मृतक की स्मृति में निर्मित किये जाने वाले स्तम्भों का संबंध महाश्म संस्कृति से स्थापित करने का प्रशंसनीय कार्य किया है [13]।

इपीग्राफिया इण्डिका में बस्तर क्षेत्र के अन्तर्गत ज्ञात शिलालेखों एवं ताम्रपत्रों में प्राचीन मंदिरों के निर्माण का उल्लेख एवं नल ,नाग तथा काकतीय एवं छिंदक नागों के राजवंशों के शासकों के राज्य करने का उल्लेख ज्ञात होता है [14]।

रायबहादुर हीरालाल द्वारा लिखित पुस्तक में बस्तर क्षेत्र के अन्तर्गत ज्ञात प्रस्तर अभिलेखों में शासकों के राज्य करने तथा प्राचीन मंदिरों के निर्माण का उल्लेख मिलता है [15]। ई. ए. डी. ब्रेट द्वारा लिखित पुस्तक में भी बस्तर क्षेत्र के अन्तर्गत शासकों का विवरण एवं कुछ महत्वपूर्ण प्राचीन मंदिरों के निर्मित होने की संक्षिप्त जानकारी प्राप्त होती है [16]।

हीरालाल शुक्ल द्वारा लिखित पुस्तक 'लंका की खोज' [17] एवं 'प्राचीन बस्तर' [18] , में प्रागैतिहासिक काल से 920 ई. तक का क्रमबद्ध इतिहास प्रकाश में आया है। वर्ष 1987 में प्रकाशित पुस्तक [19] में 920 ई. से 1324 ई. तक के इतिहास की विस्तृत जानकारी मिलती है। इसी पुस्तक में बस्तर क्षेत्र के कुछ प्रमुख मंदिरों की संक्षिप्त जानकारी मिलती है।

बी. सी. जैन द्वारा लिखित पुस्तक 'उत्कीर्ण लेख' में बस्तर के शासक नल वंश तथा चक्रकोट के छिंदक नाग ,एवं कांकेर के सोमवंश के संक्षिप्त इतिहास की जानकारी मिलती है [20]। पंड़ित सुन्दर लाल त्रिपाठी ने बस्तर क्षेत्र को रामायण कालीन संस्कृति से संबंध बतलाते हुये इसकी प्राचीनता को स्थापित करने का प्रयास किया है [21]। दुर्ग जिले के कुलिया ग्राम में वर्ष 1977 में भवदत्त तथा अर्थपति की स्वर्ण मुद्राओं के साथ-साथ अब तक अज्ञात नल शासक स्तम्भ और नन्दनराज की स्वर्ण मुद्राओं की प्राप्ति के द्वारा परवर्ती नल शासकों के इतिहास में विकास हुआ [22]।

आर. के. शर्मा द्वारा लिखित पुस्तक में भी बस्तर क्षेत्र के अन्तर्गत केवल स्मारकों , प्रतिमायें

प्रस्तर शिलालेखों एवं ताम्रपत्रों के प्राप्त होने की संदर्भित जानकारी मिलती है [23]। एस. एन. मनवानी द्वारा लिखित पुस्तक ''इवल्यूसन आफ आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर इन सेन्ट्रल इण्डिया ''में दक्षिण कोसल में कलचुरि कालीन मंदिरों के बारे में जानकारी मिलती है। इस पुस्तक में बस्तर के विष्णु मंदिर नारायणपाल ,शिव मंदिर बारसूर ,मामा - भांजा मंदिर बारसूर,देवी मंदिर बस्तर, भैरव मंदिर भैरमगढ़ के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया गया है [24]।

वी. डी. झा. द्वारा लिखित पुस्तक में बस्तर क्षेत्र की भौगोलिक पृष्ठभूमि , इतिहास , प्रतिमाओं का वर्गीकरण, प्रतिमा निर्माण के अभिलेखिक साक्ष्य एवं सांस्कृतिक केन्दों के संबंध में उल्लेख किया गया है। इस पुस्तक में उन्होने बस्तर अंचल की महत्वपूर्ण कलाकृतियों तथा प्राचीन मंदिरों की द्वारा शाखा के ललाट बिम्ब मेंअंकित और जंघा भाग की कुछ महत्वपूर्ण प्रतिमायें तथा सर्वेक्षण में प्राप्त विभिन्न प्रतिमाओं का संक्षिप्त विवरण दिया है [25]।

एल. एस. निगम के द्वारा लिखित शोध पत्र में बस्तर जिले के केसकाल तहसील के अन्तर्गत स्थित ग्राम गढ़ धनोरा के पुरावशेषों तथा टीलों का संक्षिप्त विवरण , प्रतिमायें , मंदिर स्थापत्य एवं अन्य पुरावशेषों की चर्चा की गई है [26]। नरेश कुमार पाठक द्वारा बस्तर के शिव मंदिरों के बारे में संक्षिप्त जानकारी पुरातन में दी गई है [27]।

मध्य प्रदेश शासन , पुरातत्व विभाग के अन्तर्गत , उपसंचालक दक्षिणी क्षेत्र रायपुर के तत्कालीन अधिकारी डॉ. गजेन्द्र कुमार चन्द्रौल एवं अन्य विभागीय अधिकारियों के द्वारा सन् 1988-89 एवं 89-90 में केसकाल तहसील के अन्तर्गत ग्राम ''गढ़ घनोरा [28]'' में स्थित प्राचीन टीलों को अनावृत किया गया था। तद्संबंधी स्थलों के सर्वेक्षण एवं उत्खनन से संबंधित प्रतिवेदन , संचालनालय , पुरातत्व अभिलेखागार एवं संग्रहालय (म.प्र.) भोपाल में प्रस्तुत किया गया है। उक्त प्रतिवेदन अद्यतन अप्रकाशित है। उक्त प्रतिवेदन में ग्राम गढ़घनोरा जिला बस्तर के नलयुगीन 5 वीं शती ई. के उत्तरार्द्ध में निर्मित प्राचीन ईंट निर्मित संरचना की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई है। जी. के. चन्द्रौल द्वारा लिखित शोध पत्र ''भोंगापाल का इष्टिका चैत्यगृह एवं प्राचीन मंदिर'' का प्रकाशन हेरिटेज आफ इण्डिया : पास्ट एण्ड प्रजेन्ट'' में भोंगापाल के मंदिरावशेषों तथा चैत्यगृह का वर्णन किया गया है [29]। इसी प्रकार नरेश कुमार पाठक द्वारा लिखित शोध पत्र ''भोंगापाल का नलयुगीन बौद्ध चैत्यगृह एवं हिन्दू मंदिर '' में चैत्यगृह एवं प्राचीन ईट निर्मित मंदिरों की जानकारी मिलती है [30]।

मूल्यांकन :- बस्तर जिले के पुरातत्व एवं इतिहास पर अब तक किये गये कार्यो के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि बस्तर के पुरातत्व तथा इतिहास पर यद्यपि अनेक विद्धानों ने प्रकाश डालने

का प्रयास किया है तथापि विषय के विस्तृत क्लेवर को स्पर्श नहीं किया जा सका है। बस्तर जिले के इतिहास के स्त्रोंतो की नवीन जानकारियां सर्वेक्षण से ज्ञात हुई है तथा उत्खनन से भी नये तथ्य ज्ञात हुये हैं। साथ ही साथ पूर्व के मान्यताओं की समीक्षा विश्लेषण आवश्यक है। नवीन ज्ञात तथ्यों के साथ इनका अर्न्तसंबंध स्थापित किया जाना उचित है जिससे व्यवस्थित रूप से इतिहास प्रस्तुत किया जा सके ।

अभी तक बस्तर क्षेत्र में हुये शोध कार्यो में यद्यपि वी.डी. झा द्वारा लिखित पुस्तक ''बस्तर का मूर्ति शिल्प'' में प्रतिमाओं का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है लेकिन स्थापत्य कला के बारें में शोध कार्य न होने से यहां की सम्पूर्ण मंदिरों की जानकारी नहीं हो पाती थी। अत: इस शोध कार्य के द्वारा बस्तर क्षेत्र में मंदिरो की स्थापत्य कला की विस्तृत जानकारी तथा उनका तुलनात्मक अध्ययन करने का विनम्र किन्तु महत्वपूर्ण प्रयास किया गया है। पूर्व के शोध कार्यो में नवीन सर्वेक्षण से ज्ञात सामग्री को सम्मिलित नहीं किया गया था जिससे बस्तर क्षेत्र की स्थापत्य कला का अध्ययन अधूरा था। इस प्रकार बस्तर क्षेत्र के विभिन्न कालक्रमों में निर्मित स्थापत्य कला के उदाहरण एवं कला का विस्तृत एवं तुलनात्मक अध्ययन तथा परीक्षण करने से बस्तर क्षेत्र की 5वीं शती ई. से 12वीं शती ई. तक की स्थापत्य कला को एक महत्वपूर्ण सोपान के रूप में प्रस्तुत करने का विनम्र प्रयास किया गया है।

3. अध्ययन (शोध) प्रविधि :–

प्रस्तुत शोध प्रबंध की अवधि 5 वीं.शती. ई. से 12 वीं. शती ई. तक है। इस शोध कार्य के लिये ऐतिहासिक एवं धार्मिक ग्रंथों से संबंधित विषयों के स्त्रोत को मुख्य रूप से दो श्रेणीयों में विभाजित किया गया है – पहला मूल स्त्रोत अर्थात् साहित्यिक स्त्रोत एवं दूसरा पुरातात्विक स्त्रोत। पुरातात्विक स्त्रोतों में विशेषकर अभिलेखीय एवं मुद्रा संबंधी साक्ष्यों तथा विवेच्य विषय पर प्रकाश डालने वाले मूल भूत साहित्यिक कृतियों को सामान्यत: मूल स्त्रोतों के अन्तर्गत माना जाता है। इन मूल स्त्रोतों पर आधारित परवर्ती कालीन अध्ययनों की गणना द्वितीय स्त्रोतों के रूप में की जाती है।

इस शोध कार्य के लिये मेरे द्वारा प्राचीन ऐतिहासिक स्मारकों का सर्वेक्षण और पूर्व प्रकाशनों के आधार पर ज्ञात पुरातात्विक केन्द्रों, स्थापत्य अवशेषों का क्षेत्रीय स्थल कार्य द्वारा विवरण, रेखा चित्र, छाया चित्र तैयार करना तथा संदर्भ ग्रंथों एवं अन्य प्रमुख स्थापत्य संरचनाओं से उनकी तुलना कर, अंचल की स्थापत्य कला के महत्व और विशेषता का निरूपण कार्य प्रमुख हैं। प्रकाशित ग्रंथों के सर्वेक्षणों से प्रारंभिक सूचना एकत्र करना तथा सूचना के आधार पर प्रलेखन के लिये क्षेत्रीय स्थल कार्य करना,

स्थल पर उपलब्ध स्मारकों के अवलोकन पश्चात् विवरण, छाया चित्र तथा रेखा चित्र आदि तैयार करना प्रमुख रहें हैं। बस्तर क्षेत्र के मंदिरों के संबंध में उनका अभिलेखीय प्रमाण अधिकतर प्राप्त होता है। जिससे ज्ञात मंदिर की सही तिथि का निर्धारण तथा उसके अनुरूप स्थापत्य कला के आधार पर अन्य मंदिरों की तिथि का आकलन किया गया है। क्षेत्रीय कार्य से एकत्रित सामाग्री को व्यवस्थित कर पूर्व अध्यनों की पृष्ठ भूमि में उनका मूल्यांकन तथा निरूपण प्रमुख हैं। इसके अलावा अभी तक ज्ञात विभिन्न राजवंशों के शासन काल में प्रसारित मुद्राओं, दान-पत्रों आदि से हमें जो सूचनायें प्राप्त हुई है उनकों भी आधार मानकर ज्ञात मंदिरों का अध्ययन पश्चात् काल निर्धारण किया गया है, जिन्हें वास्तविक माना जा सकता है।

संदर्भ

1. केप्टेन जे. मेकवियर *''हिस्ट्री आफ आपरेसन्स फार दि सप्रेसन आफ ह्यूमन सेक्रीफाइस इन दि हिल ट्रेक्ट्स आफ उड़ीसा''*, 1854.'
2. केप्टेन इलियट, *रिर्पोट्स आन दि बस्तर एण्ड खरोद डिपेन्डेसीज आफ दि रायपुर डिस्ट्रिक्ट* 1861, *सिलेक्सन फ्राम दि रिकार्ड्स आफ दि गर्वनमेंट आफ इण्डिया*, *फारेन डिपार्टमेंट* नं. 30.
3. ग्लसर्फड सी. एल. आर., *रिपोर्टस आन दि. डिपेन्डेन्सी आफ बस्तर, सिलेक्सन्स फ्राम दि रिकार्डस आफ दि गर्वनमेंट आफ इण्डिया*, फारेन डिपार्टमेंट नं. 39, (कलकत्ता) 1863, पृष्ठ 62 इत्यादि।
4. इपी. इं. जिल्द 9, पृष्ठ 160 इत्यादि, इ. सी. पी. बी. पृष्ठ 144-60.
5. उपरिवत् पृ. 183.
6. इपी. इं. जिल्द 9, 1907-8, पृ. 186.
7. पं. केदारनाथ ठाकुर *'बस्तर भूषण'* अर्थात बस्तर राज्य का वर्णन, 1982, पृष्ठ 114 से 116 तक।
8. *जे. एन. एस. आई.*, नं. 1, पृष्ठ 28 इत्यादि.
9. *ओ. एच. आर. जे.*, जिल्द 8, खण्ड 1, 1959, पृष्ठ 75-82.
10. *जे. एन. एस. आई.*, नं. 17, पृष्ठ 54-57.

11. *न्यू. नो. मो.,* वाराणासी , पृष्ठ 14.

12. मुरिया मर्डर एण्ड सुसाइड *(मुम्बई)* 1943,दि मुरियाज एण्ड देयर घोटुल , (बम्बई) , 1947 , दि रिलीजन आफ एन इण्डियन ट्राइब (लंदन) 1955.

13. इपीग्राफिया इण्डिका, जिल्द 9, पृष्ठ 111, 314 इत्यादि।

14. एपी.ई. , वाल्यूम IX, X, XIV, XXI, XXVI

15. राय बहादुर हीरालाल *''इंसकिप्संस इन दि. सी. पी. एण्ड बरार''* 1932 , द्वितीय संस्करण 1985 , पृष्ठ 158 से 172 तक .

16. ई. ए. डी. ग्रेट *''सेन्ट्रल प्रोविंसेंज गजेटियर्स , छत्तीसगढ़ फ्यूडेटरी स्टेट्स* वर्ष 1988, पृष्ठ 36 से 40 . ''

17. हीरालाल शुक्ल , *''लंका की खोज''*, 1977 .

18. हीरालाल शुक्ल , *'' प्राचीन बस्तर''* अर्थात् दण्डकारण्य का इतिहास 1978 .

19. हीरालाल शुक्ल *''आदिवासी सामंतवाद''* 1987, पृष्ठ 166–172 .

20. बी.सी. जैन , *''उत्कीर्ण लेख''*1961, पृष्ठ 125–31 , अंक 3, पृष्ठ 1–38 .

21. बी. ए. आई.एच. सागर , अंक 2 , पृष्ठ 125–31, अंक 3, पृष्ठ 1–38

22. एल. एस . निगम, *''प्राच्य प्रतिमा''*(भोपाल) 1997, जिल्द 5 ,अंक –1 , पृष्ठ 69–74 .

23. आर.के.शर्मा, *''मध्यप्रदेश के पुरातत्व का संदर्भ ग्रंथ''*, पृष्ठ 267 से 409 तक।

24. एस.एन.मनवानी, *''इवल्यूसन आफ आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर इन सेन्ट्रल इण्डिया''*, 1988 पृष्ठ 111 से 117 .

25. बी.डी.झा. *''बस्तर का मूर्ति शिल्प''*, 1989, भोपाल।

26. एल.एस.निगम, *'' एन्टीक्विटी आफ गढ़ धनोरा (बस्तर) एण्ड डेबिरिस क्लीयरेंस आफ विष्णु ईमेज माउन्ड''*, पुरातन स्पेशल इशू अंक 9, 1994, म.प्र. माध्यम, पृष्ठ 71 से 73 तक।

27. नरेश कुमार पाठक *''बस्तर के शिव मंदिर''*, पुरातन, पृष्ठ 48–52 .

28. जी.के.चन्द्रौल, *''गढ़ धनोरा जिला बस्तर के प्राचीन टीलों की मलवा सफाई का प्रतिवेदन''* 1990–91 ।

29. जी.के.चन्द्रौल, *''भोंगापाल का इष्टिका चैत्यगृह एवं प्राचीन मंदिर ''* हेरिटेज आफ इण्डिया : पास्ट एण्ड प्रजेन्ट, (एस्से इन आनर आफ प्रोफे. आर.के.शर्मा), दिल्ली, 1997, पृष्ठ 301–308 (सम्पादक) पी.के.मिश्रा एवं एस.के.सुब्बेरे

30. नरेश कुमार पाठक, *''भोंगापाल का नल युगीन बौद्ध चैत्यगृह एवं हिन्दू मंदिर''*, 'दि बाउन्टी अस ट्री ट्रेजर्स इन इण्डियन आर्ट एण्ड कल्चर' (होमेज टू डॉ.एच.बी. त्रिवेदी), दिल्ली, 1997, पृष्ठ 569 – 575 . (संपादक) कल्याण कुमार चक्रवर्ती

◆◆◆